



Hargharpanditji

॥ शुक्रवार व्रत की कथा ॥
॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ शुक्रवार व्रत की कथा ॥

एक समय की बात है। एक नगर में एक गरीब ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। दोनों बहुत धार्मिक और संतोषी थे, लेकिन गरीबी के कारण उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। ब्राह्मण प्रतिदिन भगवान का स्मरण करता और उसकी पत्नी श्रद्धापूर्वक माता लक्ष्मी की पूजा करती थी।

एक दिन ब्राह्मण की पत्नी ने एक वृद्ध स्त्री को घर के बाहर देखा। वृद्ध स्त्री ने उससे कहा—

“बेटी! यदि तुम श्रद्धा और नियमपूर्वक शुक्रवार का व्रत करो और माता लक्ष्मी की पूजा करो, तो तुम्हारे घर से दरिद्रता दूर होगी और सुख-समृद्धि का आगमन होगा।”

ब्राह्मण की पत्नी ने वृद्ध स्त्री से शुक्रवार व्रत की विधि पूछी। वृद्धा ने बताया कि प्रत्येक शुक्रवार प्रातः स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए। घर की सफाई करके माता लक्ष्मी का स्मरण करना चाहिए, दीपक जलाना चाहिए और श्रद्धापूर्वक माता लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए। व्रत के दिन असत्य, क्रोध, लोभ और किसी का अपमान करने से बचना चाहिए।

ब्राह्मण की पत्नी ने उसी दिन से शुक्रवार का व्रत आरंभ कर दिया। वह प्रत्येक शुक्रवार माता लक्ष्मी की पूजा करती, जरूरतमंदों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान देती और पूरे मन से माता का स्मरण करती। कुछ ही समय बाद उसके घर में धीरे-धीरे सुख-शांति आने लगी। ब्राह्मण को अपने कार्य में सफलता मिलने लगी और उसकी आर्थिक स्थिति भी सुधरने लगी। घर में अन्न, धन और आवश्यक वस्तुओं की कमी दूर होने लगी।

लेकिन समृद्धि आने के बाद भी ब्राह्मण की पत्नी ने व्रत और पूजा करना नहीं छोड़ा। उसने माता लक्ष्मी को धन्यवाद दिया और पहले से अधिक श्रद्धा के साथ पूजा करने लगी।

एक दिन माता लक्ष्मी ने उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिए और कहा—

“हे भक्ते! तुमने कठिन परिस्थितियों में भी श्रद्धा और संयम नहीं छोड़ा। इसलिए मैं तुम्हारे घर में सुख, शांति और समृद्धि बनाए रखूंगी। लेकिन याद रखना कि धन का उपयोग केवल अपने सुख के लिए नहीं, बल्कि जरूरतमंदों की सहायता और अच्छे कार्यों में भी करना चाहिए।”

ब्राह्मण की पत्नी ने माता लक्ष्मी को प्रणाम किया और सदैव धर्म, दया तथा संतोष के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

तब से वह परिवार प्रत्येक शुक्रवार माता लक्ष्मी की पूजा करने लगा। उनके घर में सुख-शांति और समृद्धि बनी रही।

कथा का फल

जो व्यक्ति श्रद्धा, संयम और पवित्र भाव से शुक्रवार का व्रत करता है और माता लक्ष्मी का स्मरण करता है, उसके जीवन में सुख, शांति, संतोष और समृद्धि की भावना बढ़ती है। माता लक्ष्मी की कृपा से घर में सकारात्मक वातावरण बना रहे—ऐसी प्रार्थना की जाती है।

माता लक्ष्मी सबके घर में सुख-समृद्धि प्रदान करें।

॥ श्री महालक्ष्म्यै नमः ॥